अंक - 8 वर्ष 2022 (अप्रैल-सितंबर)

आरोग्यम् सुख सम्पदा

स्पंदन

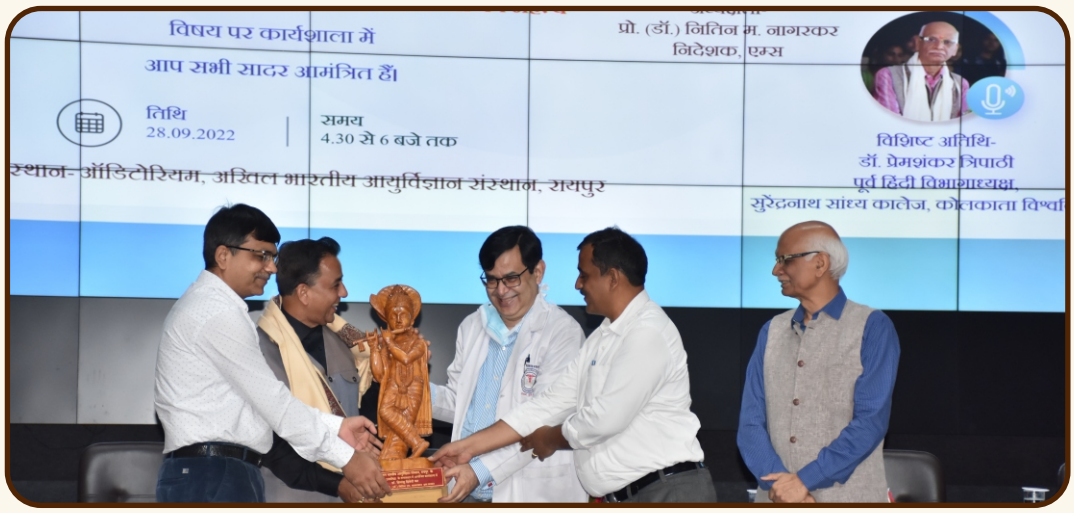

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)

अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ
1.	निदेशक की कलम से	1
2.	मुखौटा	3
3.	ऐसा पल आए न बार-बार	5
4.	उम्मीद	6
5.	नई उड़ान	7
6.	ओस की एक बूँद	8
7.	हर बार वो क्यों खामोश हुई	9
8.	मेरी पहली मोहब्बत	11
9.	माँ भारती	12
10.	आज फिर वो ही बात हो गई	14
11.	मैं कवि हूँ	15
12.	प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष	16
13.	बेईमान है जिन्दगी	17
14.	जिन्दगी क्या है तू ?	18
15.	अस्तित्व का प्रश्न	19
16.	दोस्त फिर भी	20
17.	हिंदी से हिंदुस्तान	21
18.	जन-जन की भाषा हिंदी	22
19.	राष्ट्रभाषा की पुकार	23
20.	हिंदी भाषा का महत्व	24

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ
21.	पापा और बेटी	25
22.	संगतकार पापा	26
23.	प्रजनन यात्रा "गर्भ"	27
24.	मत मारो मुझे	28
25.	ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना - माँ	29
26.	माँ को लिखी अनकही बातें	30
27.	कान्हा का शौर्यगान	31
28.	भावनाओं का सैलाब	33
29.	आखिर कौन हो तुम	34

आरोग्यम् सुख सम्पदा

निदेशक की कलम से

'जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।'

-डॉ. राजेंद्र प्रसाद

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर के राजभाषा प्रकोष्ठ की ऊर्जस्वी हिंदी ई-पत्रिका 'स्पंदन' के नवीन संस्करण (अष्टम् अंक) को संस्थान के ओजस्वी छात्रों, शिक्षकों, सम्मानीय चिकित्सकों एवं कर्तव्य परायण कर्मचारियों के मध्य एक प्रफुल्लित एवं हर्षित वातावरण में प्रस्तुत करते हुए आह्लादित महसूस कर रहा हूं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद के कथन को चरितार्थ करते हुए एवं हमारे देश के स्वर्णिम इतिहास की गौरवशाली परंपरा का सूत्रपात करने वाली 'राजभाषा हिंदी' की उन्नति की ओर एक और बढते कदम स्वरूप हिंदी छमाही ई-पत्रिका 'स्पंदन' का प्रकाशन इस बात का द्योतक है। राजभाषा प्रकोष्ठ की इस पत्रिका का नवीन संस्करण सुलभ रूप से ऑनलाइन, एंड्रॉयड, ई-मेल और एम्स, रायपुर की वेबसाइट के माध्यम से पाठकों के बीच उपलब्ध है।

भारत के बृहत् भूखंड की एकता और अखंडता को बनाए रखने में यदि कोई भाषा सार्थक रूप से इस कर्तव्य का निर्वहन कर सकती है तो वह केवल राजभाषा हिंदी ही है। चिकित्सा के क्षेत्र में तो इसकी महत्ता का पता इस बात से ही चलता है कि यह रोगी और चिकित्सक के बीच संवाद का अहम हिस्सा बन न जाने कितनी भावनाओं के संप्रेषण की संवाहक सिद्ध होती है। राजभाषा हिंदी को अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचाने में राजभाषा प्रकोष्ठ की छमाही पत्रिका 'स्पंदन' के निरंतर प्रकाशन का क्रम अत्यंत उत्साहवर्धक एवं प्रेरक सिद्ध होगा। यह पत्रिका न सिर्फ राजभाषा हिंदी के संवर्धन एवं सतत् विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है बल्कि एम्स, रायपुर के अधिकारियों, कर्मचारियों, चिकित्सकों एवं छात्रों की भावनाओं को एक सम्मानित मंच प्रदान करती है जिसके माध्यम से वे अपनी अभिव्यक्ति स्वतंत्र एवं प्रभावशाली ढ़ंग से कर पाने में सक्षम होते हैं।

इस नवीन अंक में भी उत्कृष्ट एवं विविध रचनाएं सन्निहित है। इस पत्रिका का अवलोकन करने पर हम पाएंगे कि कभी यह हमें मानवीय व्यवहार की जटिलताओं से मुलाकात करवाती है तो कभी भूली-बिसरी यादों के झरोखों से अंतरमन के दबे तारों को पुनः झंकृत कर देती है। लेखकों की असीम ऊर्जा रूपी धागों से गुथी अभिप्रेरित पंक्तियों से मन फिर नई उड़ान भरने के ख्याल से ओत-प्रोत हो जाता है तो कभी जीवन के दीर्घ सफर में संघर्षों के आंचल में छुपे अनगिनत किस्सों से पाठक अनायास ही आकृष्ट हो जाता है। इस अंक में देशभक्ति, राजभाषा हिंदी की बलवती होती भूमिका एवं वैश्विक दृष्टिकोण से संबंधित रचनाएं सम्मिलित हैं।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि 'स्पंदन' पत्रिका आप सभी के मन को निश्चित रूप से रोमांचित करेगी एवं उत्कृष्ट रचनाओं से आपकी मुलाकात कराएगी। यह पत्रिका हमारे संस्थान एम्स, रायपुर में राजभाषा हिंदी के उत्थान एवं समृद्धि की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी और सभी के बीच हिंदी में हो रहे औपचारिक एवं व्यावहारिक सवांद को बढ़ावा देगी।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका शुभाकांक्षी

प्रो. (डॉ.) नितिन म. नागरकर

निदेशक एवं सीईओ, अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति

'मुखौटा'

(एक अंतर्मुखी का अनुभव-प्लेटफॉर्म से लेकर मंजिल तक)

हाथ में कलम लिए सफर की शुरुआत हुई
इसी दौरान मेरी फिर खुद से काफी बात हुई
(पहला दृश्य प्लेटफॉर्म का)
नए चेहरे, नई दुनिया
हाथ फैलाता मुन्ना, करतब दिखाती मुनिया
मुन्ने ने टोपी पर घिरनी लगा रखी है
अपनी मासूम सी आँखों में उम्मीद जगा रखी है
मुनिया सर को पैर से छूना चाहती है
क्योंकि आज वो बख्शीश कल से दूना चाहती है।
कहीं जूते घिसकर कोई
अपनी किस्मत चमकाने में लगा है
तो कहीं कचरे के डब्बे से कोई
रोटी उठानें में लगा है
कहीं अखबारों के गठ्ठर में है
अपनी रोजी टटोलता कोई
कहीं तीन बच्चों की माँ है
उसी अखबार पे सोई
कहीं चंपक में किसी को खुशी मिल जाती है
तो कहीं दूर बैठी अम्मा ये देख जल जाती है।
कि अफसोस! नहीं था ऐसा उसका बचपन।
इसी प्लेटफॉर्म पे रहते, उसकी उम्र हो गई पचपन।
बस यही मंजर आँखों में लिए
मैं ट्रेन पर चढ़ता हूँ।
अब तक जो देखा, समझा, उसे शब्दों में गढ़ता हूँ।

शेष.....

पृष्ठ 3 का शेष.....

(दूसरा दृश्य तृतीय खण्ड वातानुकूलित यान (3 एसी) के डिब्बे का)
कहीं पे मुन्ना रोता है, कहीं हँस रही मुनिया है
यहाँ पर्दों और शीशों के बीच मेरी कुछ घण्टे की दुनिया है
इस दुनिया में बस मैं रहता हूँ।
खुद की सुनता हूँ, खुद ही सुनता हूँ।
खुद से ही कुछ-कुछ कहता हूँ।
ये मौनव्रत, ये जो एकांतवास है,
मुझे अब लुभाने लगा है
सबसे घुल मिलकर रहने का मोह
धीरे-धीरे जाने लगा है।
पर शिकायत कहीं किसी से जो पर्दे के उस पार है
सोचता हूँ, इसी सफर में जीवन का सच्चा सार है
कि जब तक ये पर्दा है मैं, मैं रहूँगा
खुद की सुनुँगा और खुद से सच कहूँगा।
पर्दा उठते ही सच्चाई खो जाएगी।
मेरे अंदर की चाह फिर से सो जाएगी।
फिर सबसे झूठी मुस्कान लिए मिलना होगा
हृदय की मरुभूमि में बनावटी फूल को खिलना होगा।
बस इसी सोच के साथ
मैं गंतव्य को पाता हूँ
अपनी गठरी टटोलता हूँ
मुखौटा एक लगाता हूँ
क्योंकि मेहनतकश जूतों पर घाव कहाँ दिखते हैं
और मुखौटों के ऊपर जनाब भाव कहाँ दिखते है
भाव कहाँ दिखते हैं

-डॉ. शिव शंकर मिश्रा
वरिष्ठ रेजीडेंट
रेडियोथेरपी विभाग

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

ऐसा पल आए ना बार-बार

ऐसा पल आए ना बार-बार
जी भर के देखूँ तुझे एक बार
ऐसा पल आए ना बार-बार...
नूर-ए-खुदा मिलता है एक बार
तेरी इबादत ही है मेरा प्यार
ऐसा पल आए ना बार-बार

अखियों में तेरे ही बसी है मेरी दुनिया
खुशबू से तेरे महकी है मेरी खुशियां
मंजिल भी तू है, सफर भी तू है
मंजिल भी तू है, सफर भी तू है
जी भर के कर लूँ तुझे मैं प्यार
ऐसा पल आए ना बार-बार

तूने की है मेरी दुनिया रोशन
सुलझी है मेरी अब सारी उलझन
तुझसे मिली मेरे दिल को धड़कन
जाना हूँ मैं क्या क्या है ये जीवन
कैसे छोड़ूँ मैं खुदा का दीदार
ऐसा पल आए ना बार-बार

ऐ वक्त आज ठहर जा तू
पूरी होने दे दिल की आरजू
ना हो कोई अब तुझसे दूरियाँ
खिलने दे अब दिल के आशियाँ
रुह में तेरे बस जाऊँ एक बार
ऐसा पल आए ना बार-बार

-डॉ. मुदालशा रवीना
सह-प्राध्यापक
नाभिकीय चिकित्सा विभाग

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

उम्मीद

तू उदास यूँ ही ना बैठ ऐ दोस्त कभी तो बारिश आएगी
मेघ घुमड़ कर आएंगे, कभी तो बदरी छाएगी
हार मानने वालों के कभी वक्त साथ नहीं होता है
आस रखेगा जब तक तू हर घड़ी भी रंगत लाएगी।
चट्टानों से टकराकर हर नदी रास्ता बुनती है
स्वाति नक्षत्र की इक बूँद को चातक, सालभर आस में रहता है
चाँद की झलक पाने को चकोर, एक पक्षी बाट जोहता है
धैर्य, संयम और साहस पथ ही ध्येय प्राप्त करवाएगी।
तू भी थोड़ा धीरज धर, मन की लगाम को पकड़े रख
वो पल भी जल्द आएगा, जब मन का पक्षी गाएगा
खुशी से तू भी झूम उठेगा, यौवन उत्साहित पाएगा
मात्-पिता और दोस्त यार, सबका गौरव बन जाएगा।
बस थोड़ी मेहनत और शिद्दत से लक्ष्य की ओर तू बढ़ता चल
प्रेरक विचार को पकड़ के रख, डर और हताशा को दूर तू रख
जब ठान लिया अर्जुन की तरह, तो लक्ष्य भेद कर पाएगा
जो आत्मगुरु को सात किया, एकलव्य सा निपुण बन जाएगा।
हार के बाद जीत का रंग, हरदम खूब निखरता है
तीखे के बाद मीठे का स्वाद, ज्यादा लजीज ही लगता है
असफलता को स्वीकार कर, आगे बढ़ना जो सीख लिया
चहुँ ओर तेरी जीत का परचम, उड़ता ध्वज सा लहलाएगा।

-डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक
पैथोलॉजी एवं प्रयोगशाला
चिकित्सा विभाग

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

नई उड़ान

आँखों में ऊँचा उड़ने की चाहत लिए
तकदीर की उड़ान का ना तू इंतजार कर
दिन पल-पल यूं गुजर रहा, ना बेकार कर

वक्त को अपने जरा इस्तेमाल कर
यूं वक्त को ना तू बर्बाद कर
चल उठ
कल बीत गया, अब कुछ कमाल कर

यूं मोह माया का खेल तो चलता ही रहेगा
दिन और रात का का पहिया बढ़ता ही रहेगा
सूरज है चमकदार फिर भी ढ़लता ही रहेगा
ये तो वक्त है जनाब... जो गुजरता ही रहेगा

है हार नहीं, जीत की विपरीत छाया कोई
यह तो देती है परिश्रम को एक दिशा नई
जनाब... अभी तो जंग है जीतना कई

आज हार कर तुम, जीत को बस कल पार करोगे
फिर उस बीत हुए वक्त का अहसास करोगे
पर जीत में, उस हुनर की, एक नई उड़ान भरोगे

-प्रियंका फुटाने
कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक, प्रशासनिक कार्यालय

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में

ओस की एक बूंद

प्रातः काल सुबह-सुबह
बाग में टहलते हुए
मैंने सूरज को नमस्कार किया
और एक मासूम ओस की बूंद
गिरी मेरी हथेली पर,
प्यारी सी कोमल मोती की तरह
और बोली...
क्या है मेरा भविष्य!
सागर में मिलूँगी...
सीप में मोती बनूँगी...
या किसी पंछी की प्यास बुझाऊँगी...
मैंने प्यार से कहा
भविष्य तो आचरण पर निर्भर है
अगर...
गिरी तुम गंगा में तो
गंगाजल बन जाओगी...
अगर गिरी सीप में तो
मोती बन आओगी...
या फिर किसी पंछी की
संजीवनी बन आओगी,
तुम गिरी हो मेरी हथेली पर
तो चलो मैं तुम्हारा भविष्य
सँवार दूँ, तुम्हें निखार दूँ
तुम्हें अर्पित कर दूँ
प्रभु के चरणों में
तुम अमृत बन जाओगी...
तुम अमृत बन जाओगी।

-प्रो. नंदकिशोर अग्रवाल
प्राध्यापक, निश्चेतना विभाग

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

हर बार क्यों वो खामोश हुई

आज एक खबर सुर्खियों में आई
नई नहीं है आती रहती है कई बार
फिर से एक लड़की कुर्बान
किसी जाहिल की हवस का शिकार
निकली क्यों वो घर से बाहर
बिना भाई, बिना माँ, बिना दोस्त, बिना बाप
ऐसे थे मेरे अपने विचार
आज फिर से वो बच के फरार
गुनहगार बने अपने और बने समाचार
वो कितनी तड़पी-चिल्लाई
पर हैवानों को न हुआ दर्द
कुछ मामले सामने आते हैं
तो कुछ पर डल जाती है गर्द
फिर कुछ बुद्धिजीवियों की बैठी पंचायत
गलती उसकी ही होगी, बेवक्त घर से निकली होगी
तंग कपड़े पहने होंगे, क्या पता लड़कों के साथ घूमती होगी
खैर हमें क्या करना है कौन सा ये हम पर गुजरा है,
बलात्कार को वो कपड़ों का दोष मानते हैं
इसके पीछे अपनी गंदी-पिछड़ी सोच छुपाते हैं।
ये सुन मुझे बहुत तरस आया था।
क्योंकि कभी समाचारों में ये भी छाया था,
वो छह महीने की थी, वो एक साल की थी
खून से लथपथ अधमरे हाल में थी
और ये घिनौनी हरकत गैर की नहीं
अपने ही रिश्तेदार की थी
कपड़ों से शिकायत है इस समाज को
इन्हें कैसे समझाऊँ मैं
बच्चियों के लिए साड़ियाँ कहाँ से लाऊँ मैं।

शेष.....

पृष्ठ 9 का शेष.....

काहे के अच्छे ये दिन
जिंदगी जीती है वो दिन गिन-गिन
इसी सोच में डूबे कौन उठाया
श्रद्धांजलियों का एक अंबार पाया।
न जाने दुनिया का ये कैसा है दौर
इंसान है खमोश और ..... कितना शोर
ये देख रो पड़े जज्बात मेरे
कोई सजा-ए-मौत तो सही
हर बार टूटी पायल लड़की की
हर बार पहले खामोश हुई
हर बार क्यों सहती है सबकुछ
हर बार कहती न कुछ भी
हर बार रोती है छुपकर
जब खामोशी बयाँ ना हुई
नजरिया गंदा है लोगों का
लड़की ही क्यों सारे ताने सहे
वो भी इंसान है
तो अपनी मर्जी से क्यों न रहे।

-सुमन नेहरा
बी.एससी. नर्सिंग 2022

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कविता)

मेरी पहली मोहब्बत

ये डूबता हुआ सूरज देखकर तेरी याद आई
जिंदगी की खुली किताब का छुपाया हुआ पन्ना
अचानक से नजरों के सामने आया...
पलकें झुकी, गाल गुलाबी हुए और
होठों पे हल्की सी मुस्कान खिली
तुम्हारी मुस्कान जो याद आई
जिसपे मैंने पहली बार अपना दिल हारा था
वो पहली मोहब्बत याद आई...

जानती तो थी मैं तुम्हें लेकिन उस दिन ऐसा लगा
जाना तो उसी दिन पहली बार
एक दूसरे से अंजान तो नहीं थे,
लेकिन उस दिन ऐसा लगा,
वो पहली मुलाकात याद आई
तुम्हारी वो आँखें जिनमें मैं खुदको ढूंढ़ती थी,
जब तुम गुनगुनाते थे, उन गानों के अल्फाजों में
खुदको पाना चाहते थे...
तुम्हें देखती तो थी, लेकिन तुमसे नजरें मिलाना चाहती थी...
तुम्हारे साथ चलती तो थी
पर हाथों में हाथ रखना चाहती थी...
और जब मैं अपने यादों की दुनिया से बाहर आई
तो अहसास हुआ... कोई आया और चला गया
बस अपनी खूबसूरत सी याद छोड़ गया...
करती हूँ इंतजार मैं तुम्हारा, दस्तक कब दोगे बताओ जरा...
और अब सोचती हूँ, कब मुकम्मल होगा
मेरा पहला प्यार, पहली मोहब्बत मेरी...

-साक्षी जाधव
एम.बी.बी.एस - 2019

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

माँ भारती

एक सिपाही की माँ भारती के प्रति भावनाएं

आध्यात्म से परिपूर्ण और संपूर्ण है माँ भारती,
संस्कृत से संपूर्ण और अक्षुण्ण माँ भारती।
इस राष्ट्र का है मोह जो बेतोड़ है माँ भारती,
नित चरण कमल पखारकर उतारुँ मैं तेरी आरती
ये कर्ज इस माटी का मुझपर
जिसने जन्म मुझको है दिया
छीन लूँ माटी का जर्रा-जर्रा
गर सरहद पर मैं डट गया।
नहीं और कुछ अभिलाषा है, बस
माँ भारती की सेवा करुँ,
गर टूट पड़े बैरी जो तुझ पर
प्राण भी न्योछावर कर दूँ
चाहे वो हों कौरव सा दल,
मैं पाण्डवों सा बल रखूँ।
गर लग गया दामन पे लांछन
उस रक्त का अभिषेक कर दूँ।
सूरज की तप-ताप से मैंने
जाना यह वज्र शरीर है
ना पत्थरों की मार,
और ना घाव करता तीर है।
पड़ गये भले पैरों पे छाले
जल गया संपूर्ण शरीर है
हूँ आज भी कर्तव्यनिष्ठ
अभी जीवित यह शरीर है।
गर थम गई सांसें ये मेरी
ऐ, धरती मुझे जगह देना,
रोप देना एक पौधा मुझपर
ये व्यथा माँ को सुना देना।
गर छलक पड़े अश्रु नैनों से
गंगा जल समझ पिला देना
बस आखिरी अर्जी माँ तुझसे,
अपने पोते को फौजी बना देना।

शेष.....

पृष्ठ 12 का शेष.....

एक किसान की भावनाएं मां भारती के प्रति

मै अंश मात्र इस धरती का
जो सींच पसीना अन्न दे
ना भूलो यह योगदान तुम
जिससे धनधान तुम आज हो।
गर ना बरसें बादल ये, तो पवन का रुख भी मोड़ दूँ
सींच के श्रामकण से पौधे, इंद्र का मुख मोड़ दूँ।
अन्नदाता इस राष्ट्र का पर,
सूनी कोठी मेरी आज भी
जाहे व्याप्त वैश्विक महामारी
सकल उत्पाद गिरी शीर्ष पर।
है बचा बाहुबल इतना
बरछी से इन बाँह में
चीर पाषाण का छाती रख दूँ
अपने कटीले हाथों से।
ये कंठ, कपाल से बहती बूंदें,
मेरे भ्रंश का ही अंश है
जो खौलकर बहती रगों में,
रुधिर का ही अंश है।
एक किसान की भावनाएं मां भारती के प्रति
लिख साहित्य अपने इस कलम से
ये खड्ग मैं संतार दूँ
गर बहे रक्त का इक कतरा
पोथी पे आज उतार दूँ।
सामर्थ्य कितना इस कलम में
ये ग्रंथ आज प्रमाण दें,
स्याह रक्त से अमूल गर,
पन्नों में आज उतार दूँ।
गर है लहू तेरे वक्ष में, कर आक्रमण तैयार हूँ,
तुम हो अगर शकुनी सा कपटी मैं भागवत का सार हूँ।
धूर्त के कुकर्म से एक भद्र मौन अधर्म है
गर हो विनाश अधर्म का तो, अधर्म करना धर्म है।
बनूँ सारथी उस रथ का मैं जो धर्म पथ अग्रिम रहे
हों कंटीले राह पर चलना निरंतर धर्म है।

-केशव कुमार साहु
बीएमएलटी -2020

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में तृतीय पुरस्कार प्राप्त कविता)

आज फिर वो ही बात हो गयी

रात कटी भी नही और सुबह हो गई
रोज की तरह मैं तो वही खड़ा था
वो ही आती जाती रही
उसका पहला स्पर्श जैसे कोई बाँहों से लिपट गई
हमने कुछ किया भी नहीं
और वो ही हमें बदनाम कर गई
मैं अभी भी वहीं खड़ा था
काफी समय हो चुका था
वो आई नहीं थी
पता चला वो जिसकी थी वो उसकी भी नही रही
रवि की किरण थी वो
जो प्रभात के साथ आई
और श्याम के साथ चली गयी
अब क्या
अब मैं वहाँ नहीं था
आज फिर वो ही बात हो गयी
दिन में उजाला था अब रात हो गयी
आज फिर वो ही बात हो गयी |

-सतीश बागडे
अस्पताल परिचारक
मनोचिकित्सा विभाग

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

मैं कवि हूँ

ऐनक हूँ समाज का, कटु सत्यों का प्रतिबिम्ब हूँ
हूँ चित्रांश मैं, धरा पर धर्मराज के अधीन हूँ
शोषितों के अभाग के अंतों की छवि हूँ
मैं जन नायक, मैं जन सेवक, मैं कवि हूँ|
शब्द वाणों का श्रेष्ठ धनुर्धर, अलंकरों से सुशोभित हूँ
स्याह की कलाकृति का कर्ता, शुभआकांक्षाओं का लोभित हूँ
कलम की धारों में निर्मित, अस्त्रों की अमिट छवि हूँ
मैं अपराजित, मैं मृत्युन्जय, मैं कवि हूँ|
न्याय का प्रतिबद्ध अंगरक्षक, अन्यायियों का उजारक हूँ
धर्म पथ का अडिग पथिक, असहायों का उद्धारक हूँ
सभ्यता संस्कृति की धरोहर संजोते पृष्ठों की जीवित छवि हूँ
घृणा भोगता, प्रेम पिरोता, मैं कवि हूँ|
रंजक हूँ मन मानस का, आचरणों की पराकाष्ठा हूँ
स्थाई भाव हूँ नव रसों का , काव्य सौंदर्यों की व्याख्या हूँ
कर शासकों के सिंहासन कपाती, जन विद्रोह की छवि हूँ
शरीर से नश्वर, रचनाओं से शाश्वत मैं कवि हूँ|

-वरदान अनिल श्रीवास्तव
एम.बी.बी.एस - 2020

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष

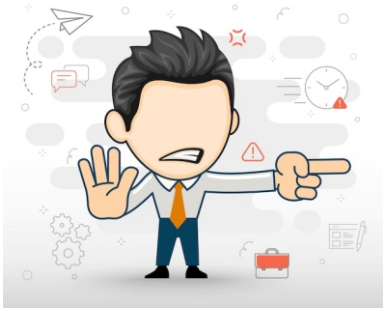

वे आते हैं श्रृंगार की स्याही में चेहरे पुते हुए ,
तो वे आते हैं कभी काले ऐनकों से आँखे ढके हुए
वो आते ही देते हैं तुम्हें बहाने से " अरे ! कुछ नहीं
बस सीढ़ियों से फिसल गए |"
चमकती है उनकी आँखे जब आपकी नजरें मिले ,
वो आए है रात के आंसुओं को तकिये पर सुखाए
वो दिखे भी ऐसे गुजरते लम्हें में जिसकी तारीख नहीं हमें याद पर,
कुछ तो हुआ उस वक्त जो वो याद आते हैं तो कांप जाती है रूह
वो आज भी बिता रहे हैं अपना जीवन घर कहे जाने वाली
चार दीवारों में सिमटकर क्योंकि शाम को करने पड़ते हैं सब्जी
के साथ खर्च हुए शब्दों के हिसाब
वो आते है शर्मिंदगी में डूबे हुए पर
कोई उन्हें जगाओ, ये शर्मिंदगी नहीं है उनकी ढ़ोने की
कोई आग लगा दो उन हिसाब की राद्दियों को
कोई उस बीतते लम्हें का हाथ पकड़कर पूछें क्या आप ठीक हैं ?
कोई जाकर उस तकिये की जगह ले लो उन आंसुओं के लिए
कोई जाकर उन सीढ़ियों को दिखा दो कानून का रास्ता
कोई हटा दो वो काली ऐनके और दो उन्हें वो हिम्मत
कि उन्हें ऐनकों की जरुरत ना पड़े
कोई मिटा दो श्रृंगार और दिखने दो काले - नीले दाग जो
इस समाज में बसी गंदगी से मेल खाते हैं |

-अमृता जोशी
बी.एससी. (एच.) नर्सिंग 2021

(हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के अंतर्गत स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता छात्र वर्ग में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कविता)

बेइमान है जिन्दगी

कभी हँसाती है तो कभी रुलाती है जिन्दगी
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
सुलझी हुई उलझनों में फसाती है जिन्दगी
ये जिन्दगी है मेरे दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
शव में भी रफ़्तार बढ़ाती है जिन्दगी
कभी उम्मीद तो कभी निराश कराती है जिन्दगी
डूबते हुए को भी किनारा दिखाती है जिन्दगी
कभी मनाती तो कभी खुद रूठ जाती है जिन्दगी

ये जिन्दगी है दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
कभी खामोश रहती
तो ख़ामोशी पढ़ना सिखाती है जिन्दगी
कभी सच छुपाती है तो कभी झूठ से वाकिफ कराती है जिन्दगी
ये जिन्दगी है दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
कभी गलत को सही तो सही को गलत बताती है जिन्दगी
कभी इंसाफ दिलाती तो कभी मुजरिम बनाती है जिन्दगी
कभी निर्दोष पर मुक़दमे तो दोषी पर फूल बरसाती है जिन्दगी
कभी झुकाती तो कभी आसमां तक उठती है जिन्दगी
ये जिन्दगी है दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
कभी इश्क में डुबाती तो कभी नफरत में जलाती है जिन्दगी
पाक रिश्तों में भी दरारें लगाती है जिन्दगी
ये जिन्दगी है दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी
बदनसीब हैं वो लोग
जिन्हें जिन्दगी भर जिन्दगी जीनी नहीं आती
ये जिन्दगी है दोस्त
हमेशा बस यूँ गुनगुनाती है जिन्दगी

-दिपेश प्रजापति
नर्सिंग अधिकारी
हृदय रोग विभाग

जिन्दगी क्या है तू ?

बनते बिगड़ते हालातों का हिसाब है
रोज जुड़ते पन्नों की किताब है
जमानों की ठोकरों का सैलाब है
या मिलती खुशियों का अहसास है
जिन्दगी क्या है तू ?
क्या बचपन की मनमानी है
जिसमें बच्चें करते शैतानी हैं
या पागल जवानी है
या बुढ़ापे की कहानी है
जिन्दगी क्या है तू ?
ख़ुशी के कारणों का पैगाम है
या उदासी का नाम है
संघर्ष वाला काम है
या जीत का ईनाम है
जिन्दगी क्या है तू ?
मन में उठता सवाल है
या उसके जवाबों का जाल है
सपने देखने वाला ख्याल है
या हिम्मत जुटाने वाला उबाल है
जिन्दगी क्या है तू ?
माता-पिता का दुलार है
जीवन साथी का प्यार है
बच्चों की पुकार है
या दोस्ती वाला यार है
जिन्दगी क्या है तू ?

-निशा नेताम
बी.एम.एल.टी. 2020

अस्तित्व का प्रश्न

स्वयं से एक प्रश्न किया
क्या मेरा अस्तित्व इतना ही है?
एक जीवन को जीवन रूपी धरातल पर लाना।
उसकी ना खत्म होने वाली मृग तृष्णा को शांत करना।
अपने आँचल से उसको अमृत पिलाना
पुनः नए जीवन को अस्तित्व देना।
आज फिर खुद से एक सवाल किया।
क्या मेरी पहचान इतनी ही है?
बाल्यावस्था को सच, झूठ का भेद बताना
बुढ़ापे में उसका साया बनकर हर सुख-दुःख में साथ देना।
न चाहते हुए भी उसके हर कर्म में अर्धांगिनी बनना
यौनावस्था में उसकी आवश्यकताओं को मूर्त रूप देना
एक बार फिर खुद से एक सवाल किया।
क्या मेरा स्वाभिमान बस इतना ही है ?
अपनों द्वारा ठुकराए जाने पर भी उसकी सलामती की दुआ करना
अपने कुम्हलाते हुए शरीर को उसकी बलि वेदना में झोंक देना।
कभी माँ, कभी संगिनी, कभी बहन कभी औरत बन
उसकी हर तपिश को ठंडी छांव में बदलना।
न जाने क्यों खुद से एक सवाल किया।
क्या मेरा अभिमान इतना ही है?
आज मैं खुद की तलाश में निकली हूँ।
अपने अस्तित्व के घाव को भरने निकली हूँ
न जाने संघर्ष के सफ़र को कहाँ विश्राम मिलें
कहीं तो थोड़ी सी जमीन थोड़ा आसमान मिलें।

-आकृति जायसवाल
(पीएच.डी. अध्ययनरत)
शरीर क्रिया विज्ञान

दोस्त फिर भी

जाने के पश्चात न जाने कितनों को याद तुम आए होगे
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |
शायद उलझती मन की गाठें आशा ढूंढ न पाई होगी
जब जीवन के संघर्ष से आसान तुम्हें मौत नजर आई होगी
दोस्त फिर भी
जीवन से लड़ना था तुम्हें
न जाने कितनों को याद तुम भी आए होगे
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |
ख़ुदकुशी से नरक मिलता है
क्या धर्म गुरुओं ने यह पाठ नहीं पढ़ाया होगा
क्या नर्क से बद्दतर जीवन उसे नजर आया होगा
शायद तभी उसने यह कदम उठाया होगा
दोस्त फिर भी
जीवन से लड़ना था तुम्हें
न जाने कितनों को याद तुम आए होगे
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |
उस माँ को धक्का सा लगा होगा सुनकर
कि उसका बहादुर बेटा आज हार गया
उस पिता की उम्मीदें थम सी गई होगी सुनकर
कि उनका लायक बेटा आज कर्तव्य निभा न सका
शायद बेटे को यह ख्याल न आया होगा
इसलिए उसने यह कदम उठाया होगा
दोस्त फिर भी
जीवन से लड़ना था तुम्हें
न जाने कितनों को याद तुम आए होगे
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |
शायद अंतिम सांसों में तुम भी पछताए होगे |

-मो. वसीम मेनन
ओटीटी-2020

हिंदी से हिंदुस्तान

मुगल आए या आए गोरे सबको मार भगाया था।
सारा भारत जब आपस में हिंदी से जुड़ पाया था।
तभी तो हिंदी भाषा में गाया जाता राष्ट्रगान है,
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी से हिंदुस्तान है।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आपस में ये सब भ्राता हैं
है हिंदी जिसके कारण ही आपस में इनका नाता है,
मिल-जुलकर जो ये रहते तो भारत का होता निर्माण है।
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी से हिंदुस्तान है।
हिंदी में सीखें पढ़ना हम गाने हिंदी में गाते हैं
फिर क्यों हिंदी अपनाने में व्यर्थ ही हम घबराते हैं,
सारे देश के संचार साधनों की यही तो एक जान है
संस्कृत से संस्कृति हमारी हिंदी से हिंदुस्तान है ।

-आशाराम मीना
नर्सिंग अधिकारी
ऑन्कोलॉजी विभाग

जन-जन की भाषा हिंदी

जन-जन की भाषा है हिंदी,
भारत की आशा है हिंदी
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है
वो मजबूत धागा है हिंदी
अंग्रेजी में नम्बर थोड़े कम आते हैं
अंग्रेजी बोलने में घबराते हैं
पर स्टाइल के लिए पूरी जान लगाते हैं
क्यों की हम हिंदी बोलने से शर्माते हैं
देश आगे बढ़ गया पर हिंदी पीछे रह गई
इस भाषा से अब हम नजर चुराते है
क्योंकि हम हिंदी बोलने से शर्माते है
माना अंग्रेजी पूरी दुनिया को चलाती है
पर हिंदी भी तो हमारी पहचान दुनिया से कराती है
क्यों न अपनी मातृभाषा को फिर से सर आँखों पर बिठाए
आओ हम सब मिलकर हिंदी दिवस मनाए |

-हनुमान सिंह ज्ञानी
अस्पताल परिचारक

राष्ट्रभाषा की पुकार

अ आ इ ई के मधुर स्वरों में
सुवासित पुष्पों सी महक है |
उ ऊ ए ऐ अं अ: में
मधुर संगीत की खनक है
मेरे छत्तीस व्यंजनों में
समग्रता की झलक है
सहजता और सरलता की
मैं अनमोल प्रतिकृति हूँ
मानव मुख की प्रथम अभिव्यक्ति
मैं तुम्हारी हिंदी हूँ|
सरल शब्द , समृद्ध व्याकरण
यही है शुभ मेरे अलंकरण
पर अंग्रेजी की दासता ने
कर डाला मेरा चीरहरण |
हर बोली को किया समाहित ,
फिर भी आज अकेली हूँ
मानव मुख की प्रथम अभिव्क्ति ,
मैं तुम्हारी हिंदी हूँ|
खग रहता चाहे किसी डाल पर
अपनी भाषा में ही कूकता
फिर भारत के नैनिहालों तुमने क्यों
खो दी अपनी निजता
विदेशी भाषा के साये तले
मैं अपने देश में ही अजनबी हूँ
मानव मुख की प्रथम अभिव्क्ति ,
मैं तुम्हारी हिंदी हूँ|

-प्रिया शर्मा
कनिष्ठ प्रशासनिक सहायक
अस्थिरोग विभाग

हिंदी भाषा का महत्व

दुनिया में हिंदुस्तान का अपना एक अलग ही प्रभाव है
यह हिंदी भाषा का ही बहाव है |
समझना चाहूँ तुझे , तो तू बड़ी कठिन पहेली है |
फिर भी ना जाने क्यूँ मुझे तू लगती अच्छी अलबेली है |
सभी भाषाएँ गजब लगती हैं
फिर भी तेरे आगे कुछ फीकी लगती हैं |
तेरे एक-एक शब्द में छुपा कुछ गहरा राज है
यही तो तेरा ख़ुफ़िया अंदाज है |
सबको घुल मिल कर चलना तूने सिखाया है
यही तो अंदाज है तेरा जो सबको भाया है |
सभी भाषाओं का मेल है तू
इसलिए तो अनमोल है तू ,
हमारी संस्कृति की भाषा है हिंदी |
माँ की ममता सी लगती है
भाई का प्यार सा लगती है ,
इसलिए तू अपना परिवार सा लगती है |
हिंदी से बना है हिंदुस्तान,
यही तो है हिंदी का बखान |

-प्रतिभा
बी.एससी. नर्सिंग-2021

पापा और बेटी

पापा की बेटी से जिम्मेदारी,
बहु बन जाती हैं बेटियां
तेरा-मेरा कहते-कहते
हमारा कहना सीख जाती हैं बेटियां
थोड़ा काम में थकने वाली से
पूरे घर को संवारने लग जाती हैं बेटियां
हर बात में लड़ने वाली
आज चुपचाप बातें सुन लेती हैं बेटियां
पापा की हर बात में खर्च कराने वाली,
एक-एक पैसा जोड़ने वाली बन जाती हैं बेटियां
जब माँ बनती है तब सब दुःख भूल जाती हैं बेटियां
बेटा तो एक कुल को तारता है
पर दो-दो कुल को तारती हैं बेटियां
सच ही कहा है किसी ने बेटी से बहू तक
बहुत बदल जाती हैं बेटियां

-ऐश्वर्य कुमार श्रीवास
वित्त सलाहकार कार्यालय

संगतकार पापा

पापा जिन्होंने चलना सिखाया, मुसीबतों से लड़ना सिखाया |
हाथों की उँगलियां पकड़कर पूरे गली - मोहल्ले का चक्कर लगवाया ||
अपनी परेशानियाँ छुपाकर जिन्होंने हमारे चेहरे पर मुस्कान लाया |
खुद जिम्मेदारियों के बोझ में रहकर हमें जिम्मेदार बनाया ||
पापा आपने मेरे सपनों को अपना सपना बनाया ,
खुद अकेले हो कर भी मैंने अपने पास आपको खड़ा पाया ||
खुशियाँ मेरी और जश्न आपने मनाया और हर वक्त आपने मेरा साथ निभाया |
रोना मेरा आपका यूँ हौसला रखना
डरना मेरा और उस अँधेरे में रौशनी आपका देना|
यूँ ही संगतकार बनकर साथ मेरे हर वक्त रहना ||
पापा आप एक उम्मीद हो, परिवार की हिम्मत हो ||
बाहर से बिल्कुल सख्त अंदर से नम्र हो |
आपके दिल में दफन कई मर्म होंगे |
आप आँधियों में हौंसलों की दीवार हो ||
किरदार तो बहुत होंगे पर आप वो किरदार हो जो शब्दों में बयाँ न हो ||
कभी जताते नहीं हो पर इस भीड़ भरी दुनियां में हर वक्त आप हमें बचाते हो
अभी भी मेरी हर फरमाइश एक बार में मान जाते हो |
कभी नम नहीं होती मेरी आँखे उसका पूरा ख्याल आप रखते हो ||

-अस्मिता सहारे
बी.एससी. नर्सिंग

प्रजनन यात्रा "गर्भ"

अहसासों के आइने में वो अहसास निराला होता है
जब स्त्री के गर्भ में, नन्हे बीज का प्रवेश होता है
शुरू कोख में नन्हे बीज का अंकुरण होता है
तब कोख में नौ महीने का जीवन सृजन होता है
शुरू हुई जीवन गति ... स्पंदन, स्वप्न, आहत, सुनता रहा,
माँ के गर्भ में शिशु , ममत्व से बंधता रहा |
बना मुंह, नाक-कान और आई इन्द्रियों में जान
एक नाल से जुड़ गया गर्भ में शिशु का जीवन काल
जब गर्भकालीन मधुमेह ने जकड़ लिया शिशु को कोख में
पीड़ा इन्सुलिन की माँ सहती रही जोश में
जब मौन के गर्भ भावनाओं का स्पंदन होता है
तब माँ के गर्भ में शिशु कि "प्रजनन यात्रा " पूर्ण होती है |

-उषा
नर्सिंग अधिकारी
प्रसूति एवं स्त्रीरोग विभाग (ओ.टी.)

मत मारो मुझे

माँ अगर लड़की रूप में मैंने जन्म लिया
तो कैसा गुनाह कर दिया
कि मेरी आँख खुलने से पहले ही
तुम मुझे गहरी नींद में सुला देना चाहती हो
माँ मैं पूछती हूँ क्या है ऐसा जो बेटी बनकर
मैं नहीं कर सकती
एक बार मुझे देखो तो सही
अपना अक्स ही मुझमें पाओगी
एक बार मुझे जरा अपनाकर तो देखो
जरा प्यार से सहलाकर तो देखो
पापा की लाड़ली बन जाउंगी
घर में फूलों की तरह महकूंगी
वादा है भूल जाओगी अपनी सारी तकलीफें
जरा प्यार से अपना बनाकर तो देखो
माँ मैं पूछती हूँ
दुनिया की क्या बात करते हो
जब भेदभाव घर में ही शुरू करते हो
क्या फायदा इतना पढ़ने-लिखने का
जब बेटी की अहमियत ही समझ नही पाते
माँ मैं सवाल पूछती हूँ
उन हत्यारों से जो दुर्गा लक्ष्मी माता को पूजते हैं
तब क्यों भूल जाते हैं कि वो भी तो औरत है
जिनको पूजने तीर्थ करने जाते हो
कैसी बुद्धि पाई है तुमने कि अपने घर जन्मी दुर्गा-लक्ष्मी
तुमको नजर नही आती
माँ मेरी तेरे से यही विनती है
कि बेटी बनकर तेरे आँचल में आई हूँ
मुझे बेटी के रूप में अपना लें
मत मार मुझे, मत मार मुझे,
मत खेल मेरे खून से होली
मुझे भी अपनी तरह जीने का हक़ दें |

-वंदना आनंद
पुस्तकालय परिचारक

ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना - माँ

कभी प्यार है, कभी फटकार है,
तेरी डांट में भी एक मीठा दुलार है |
तेरी चरणों के नीचे मेरा 'सारा संसार है
माँ तू ही मेरी ताकत, तू ही अंहकार है |
झूठी सी इस दुनिया में एक तू ही तो सच्ची है ,
इसलिए तो सर्वप्रथम तू, मेरे दिल में बसती है
साधु जैसी ज्ञानी है, चंचल जैसी कोई बच्ची है
शांत और निर्मल है तू, जैसे गंगा बहती है |
ईश्वर ने अनंत गुणों से, एक परी बनाई है ,
दुआ है जिसकी ताकत, नाम जिसका माई है |
हाथ जलाकर चूल्हे उसने मेरे लिए रोटी बनाई है
नींद कुर्बान कर अपनी, मुझे लोरी सुनाई है |
मेरे जीवन की पहली इकाई है, अग्निपथ में परछाई है
ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना मेरी प्यारी माई है |

-आकांक्षा वर्मा
बी.एससी. (एम.एल.टी.) 2020

माँ को लिखी अनकही बातें

पिछले कुछ समय से चुभ रहे हैं
ये गर्म दिन बड़े और ये उमसी लम्बी रातें
कैसे ख्याल रखती थी तुम माँ यह सोचकर
लिख रहा हूँ ये कुछ तुमसे अनकही बातें |
क्योंकि एक तुम ही हो माँ
जिसकी वजह से मैं इतना काबिल बन पाया हूँ
क्योंकि बचपन में तुमने मारा भी और प्यार से मनाया भी
खाना ना खाने पर गुस्से के साथ डांटा भी
और प्यार से अपने हाथों से खिलाया भी |
शैतानी करने में था उस्ताद
सजा में तुमने मारा भी और प्यार से समझाया भी
बड़ा हुआ स्कूल जाने लगा इतराया मैं था करता
तब अपने कोमल हाथों से तूने नहलाया भी
और कपड़े पहनाया भी
मेरा खाना और दोस्त खा लेते थे
तब मैं भूखा ना रह जाऊ सोचकर
तूने प्यार से दूसरा डब्बा बनाया भी और बंधाया भी |
पढ़ने का मन नहीं करता था मेरा
तुम डरने लगी क्या होगा आगे अब मेरा
तब तुमने डांटा भी और प्यार से पढ़ाया भी |
जब कभी खेल के दौरान गिरा तो
रोने की आवाज से घर गूँज उठाया
तब तुमने चुप भी कराया और सहलाया भी |
देखते-देखते इतना बड़ा हुआ मैं कि
हाई स्कूल इंटर सब अव्वल कर लिया
तुम खुश थी बहुत
आशीर्वाद भी दिया और खिलाया लड्डू भी |
यहाँ आज जहाँ हूँ तुमसे दूर हूँ
फोन पर होती है बात पर स्पर्श से वंचित हो चुका हूँ
ऐसी मजबूरियों ने मजबूत भी है किया और बहुत रुलाया भी |
माँ एक तुम ही हो जिससे जितना स्नेह करूं उतना कम है |
अब जब भी मिलता हूँ तुमसे तेरी आँखे रहती है नम है |
जानता हूँ तुम्हें चिंता रहती है मेरी माँ
क्योंकि तेरे लिए आज भी हूँ वही छोटा सा नटखट निकम्मा
वही छोटा सा नटखट निकम्मा |

-कार्तिक गुप्ता
एम.बी.बी.एस - 2019

कान्हा का शौर्य गान

काली थी घटा घनघोर पवन
थे सात द्वार, बंदी का भवन
प्रभु ने ली तब ऐसी अंगड़ाई
प्रहरी सोये सब निद्रा छायी
पालनकर्ता के पालन को
प्रभु को गोकुल पंहुचाने को
लौह कपाट निमुक्त हुए
वसुदेव बेड़ियों से मुक्त हुए
मध्यरात्रि अँधियारा में
करतल यमुना की धारा में
यमुना फिर से उछल पड़ी
प्रभु के चरणों को मचल पड़ी
यमुना के मन को हर्षाया
प्रभु ने चरणों को लटकाया
आसमान था गरज रहा
मेंघों के लिए था बरस रहा
फिर शेषनाग ने की छाया
प्रभु को गोकुल तक पंहुचाया
हर कली खिली हर फूल खिला
गोकुल को था अब कान्हा मिला
'लल्ला' को हृदय में बैठाये
नन्द- यशोदा यूँ मुस्काए
ग्वाल - बाल सब साथ लिए
लीलाधर अब लीला को निकले
कालिया नाथन की सूझ पड़े
प्रभु कालिंदी में कूद पड़े
मुरली की धुन पे तान दिया
मोहन ने जग को बांध दिया
फिर उठा लिया गोवर्धन को
और जीत लिया हर मन को |
ब्रज में खेली ऐसी होली
राधे -राधे फिर दुनिया बोली
गोकुल छूटा, राधा बिछड़ी
यशोदा की ममता बिखरी |

शेष.....

पृष्ठ 31 का शेष.....

मथुरा को प्रस्थान किए
कंश वध का मन लिए
मुरली को अब त्याग दिया
चक्र सुदर्शन हाथ लिया
मित्र का कर्ज चुकाने को
सुदामा को गले लगाने को
प्रभु ने वो संताप किया
तीनों लोकों को नाप दिया
रुकमणि की सुनी पुकार
पहनाया फिर फूलों का हार
धागे का मोल चुकाने को
सखा की लाज बचाने को
जब सारे संकट विकट हुए
तब श्रीकृष्ण प्रकट हुए
दु:शासन को ऐसे चित किया
साड़ी को यूँ अनंत किया |
शांति दूत बनकर आए
सारा विदुर घर ही खाए
दुर्योधन तब खिन्न हुआ
अभिमान से और अभिन्न हुआ
काल को यूँ नापने चला
प्रभु को था बांधने चला |
मानवता की स्थापना को
धर्म-सत्य-संस्थापना को
गीता का फिर सार दिया
जग को सारे तार दिया
पार्थ के रथ को थाम लिया
सारथी बन कर मान दिया
अर्जुन को आश्वस्त किया
जीत का मार्ग प्रशस्त किया
यह कथा है श्री कृष्ण मुरारी की
जय हो मुरलीधर बिहारी की |
कृष्ण कन्हइया हे रणछोड़
नन्द गोपाला तुम चितचोर
चक्र सुदर्शन मुरलीधारी
माखन प्रिय हे कृष्ण मुरारी
जग का तुम कल्याण करो
कलकी फिर अवतार धरो |

-अभिनाश महरडा
एम.बी.बी.एस - 2019

भावनाओं का सैलाब

भावनाओं का सैलाब है जो मन में मुस्कान से छुपाया है
दर्द की लहरों का जोर, बस आंसुओं ने दिखलाया है
हर समझाइस सही मिली मुझको, मगर मुझे कहाँ कौन समझ पाया है
उम्मीदों के बोझ से मन भारी हो चला है सुकून का रास्ता कहाँ दिख पाया है
मुझमे मैं गुम हूँ आशाएं उम्मीदें अफ़सोस बेचैनी का डेरा है
फिर अगली सुबह घनघोर अँधेरा है
खुदा की न जाने कैसी माया है भावनाओं का सैलाब है
उस मुस्कान में छुपाया है
दूसरे ही पल अंधकार से मनुष्य फिर उठ खड़ा होता है और कहता है .....
मेरे हौसलों में आग है, तू रोक सके तो रोक
मैंने सोचना ये छोड़ दिया है कि क्या कहेंगे लोग
है वस्त्र मेरी चाह के, जो करती मैं उपयोग
हर बात मेरी है कटार, अब नहीं कोई संजोग
बंदिशे मैं तोड़ आई, भय की चोली छोड़ आई
छोड़ आई हमियाँ और फिजूल शर्म का रोग
मेरे हौसलों में आग है, तू रोक सके तो रोक
मैंने सोचना ये छोड़ दिया, अब क्या कहेंगे लोग,
अब क्या कहेंगे लोग

-प्रीति शर्मा
अधिष्ठाता कार्यालय

आखिर कौन हो तुम ?

इस भागती दौड़ती जिंदगी में सुकून की छाँव हो तुम,
गर मैं गिरूँ, तो संभालता हाथ हो तुम,
मेरे कष्ट से मायूस और मेरी खुशियों के सरताज हो तुम,
किन लफ़्ज़ों में बयाँ करूँ, आखिर कौन हो तुम ||
मेरे सफ़र की मंजिल और उस मंजिल का मुकाम हो तुम,
वक्त की तपती धूप में ठंडी थाह हो तुम,
गर मैं जब भी हारूं, उसमें भी जीत के अक्स हो तुम,
किन लफ़्ज़ों में बयाँ करूँ, आखिर कौन हो तुम ||
सुबह की लहलहाती घास में ओस की बूँद हो तुम,
निःशब्द संगीत के सुरमई अल्फाज़ हो तुम,
गर मैं कही गुम जाऊं, मुझे मुझसे मिलाने वाले फ़रिश्ता हो तुम,
किन लफ़्ज़ों में बयाँ करूँ, आखिर कौन हो तुम ||
बदरंग जिंदगी में इन्द्रधनुषी रंगों की रंगोली हो तुम,
क्षितिज में ढलती शाम के उजियारे हो तुम,
अपनी आवाज़ से सुरीली तान छेड़ती साज हो तुम,
किन लफ़्ज़ों में बयाँ करूँ, आखिर कौन हो तुम ||

-मौना चौबे
वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक

राजभाषा प्रकोष्ठ 'स्पंदन' पत्रिका में प्रकाशन के लिए मौलिक रचनाएं आमंत्रित करता है। एम्स, रायपुर के अधिकारी, संकाय सदस्य और कर्मचारी स्वरचित रचनाएं rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in पर ई-मेल के माध्यम से प्रेषित कर सकते हैं।

हिंदी पखवाड़ा-2022

राजभाषा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में हिंदी पखवाड़ा-2022 का आयोजन दिनांक 14-28 सितंबर, 2022 के मध्य किया गया। हिंदी भाषा के कार्यालयीन प्रयोग एवं व्यावहारिकता को प्रोत्साहन देने के लक्ष्य से आयोजित यह हिंदी पखवाड़ा सभी चिकित्सक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र समुदाय को विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से एक बहुपयोगी मंच प्रदान करता है। इस वर्ष हिंदी भाषा के उत्थान के लिए आयोजित हिंदी पखवाड़े में तिथिवार विभिन्न प्रतियोगिता जैसे कि निबंध लेखन, स्वरचित काव्य-पाठ, आशु-भाषण, टंकण प्रतियोगिता, श्रुति लेख, चिकित्सा शब्दावली, प्रशासनिक शब्दावली, वाद-विवाद एवं प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं को समस्त अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य और छात्र के दो वर्ग में आयोजित किया गया। हिंदी पखवाड़ा-2022 में दोनों वर्ग के प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया एवं हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से हिंदी के प्रति अपने अगाध प्रेम का परिचय करवाया। इन प्रतियोगिताओं में 127 अधिकारी/कर्मचारी/संकाय सदस्य एवं 89 छात्रों सहित कुल 216 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने न सिर्फ अधिक संख्या में भाग लिया बल्कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता भी रहें। पुरस्कार वितरण एवं कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28.09.2022 को एक भव्य कार्यक्रम के दौरान किया गया। विजेता प्रतिभागियों को 2,24,987/- रू के पुरस्कार वितरित किए गए।

हिंदी पखवाड़ा-2022 के पुरस्कार वितरण समारोह में **'आजादी का अमृत महोत्सव-हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का महत्त्व'** शीर्षक पर आयोजित की गई। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हिमांशु द्विवेदी, प्रधान संपादक, दैनिक हरिभूमि और आईएनएच एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, सुरेंद्रनाथ सांध्य कॉलेज, कोलकाता विश्वविद्यालय उपस्थित रहें एवं संदर्भित शीर्षक पर अपने उदारचनों से सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। राजभाषा प्रकोष्ठ, एम्स, रायपुर में आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2022 निश्चित रूप से हिंदी के विकास एवं उत्थान में मील का पत्थर साबित होगी।

आत्मगौरव का अनुभव करा एक डोर में बांधती है हिंदी

- **एम्स में पुरस्कार वितरण समारोह और कार्यशाला के साथ हिंदी पखवाड़ा संपन्न**
- **हरिभूमि के प्रधान संपादक हिमांशु द्विवेदी और डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी सम्मानित**

रायपुर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में 14 से 28 सितंबर के मध्य आयोजित हुआ हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण और कार्यशाला के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर प्रमुख वक्ताओं ने हिंदी को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बताते हुए इसे आत्मगौरव का अनुभव कराने वाली और देश को एकसूत्र में बांधने वाली भाषा बताया। इस अवसर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए हरिभूमि के प्रधान संपादक हिमांशु द्विवेदी और कोलकाता विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी का सम्मान किया गया।

राजभाषा प्रकोष्ठ के तत्वावधान में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह और कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए निदेशक प्रो. (डॉ.) नितिन एम. नागरकर ने कहा कि दुनिया में हिंदी सबसे अधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। भारत में 53 करोड़ से अधिक हिंदी भाषी हैं। ऐसे में हिंदी का दैनिक प्रयोग अधिक से अधिक करने की आवश्यकता है। उन्होंने नियमित दिनचर्या में अधिक से अधिक हिंदी या अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करने पर जोर दिया।

मुख्य अतिथि दैनिक हरिभूमि के प्रधान संपादक डॉ. हिमांशु द्विवेदी ने कहा कि अंग्रेजी की मानसिक दीनता को त्याग कर हिंदी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है परंतु इसके लिए हिंदी को नहीं छोड़ा जा सकता है। सभी को कुछ घंटे केवल हिंदी में बोलने का संकल्प लेना होगा जिसे बढ़ाकर दिन और सप्ताह में बदला जा सकता है। उन्होंने कहा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का सफर लंबा है मगर यह सफर तय करना होगा। हमारी भाषा हिंदी ही रहे इसे हिंग्लिश न बनने दें।

कोलकाता विश्वविद्यालय के सुरेंद्रनाथ सांध्य कालेज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कहा कि हिंदी का पहला समाचार पत्र और स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम बंगाल में प्रारंभ हुए। हिंदी की पताका गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में फहराई गई है। कभी भी हिंदी किसी अन्य भाषा के लिए बाधा नहीं बनी। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएं भारतीय संस्कृति की परिचायक हैं। भारतीय संस्कृति में पहले से ही कोविड प्रोटोकॉल का पालन किया जा रहा है। इसमें संग्रह और त्याग का विवेक दिया है। उन्होंने सभी स्थानीय भाषाओं को ज्ञान-विज्ञान की भाषा बताते हुए हिंदी को एक सेतु बताया और कहा कि हिंदी आत्मीयता का बोध कराती है।

डीन (अकादमिक) प्रो. आलोक चंद्र अग्रवाल ने हिंदी में मेडिकल पुस्तकों के प्रकाशन पर जोर दिया। अंत में उप-निदेशक (प्रशासन) अंशुमान गुप्ता ने धन्यवाद दिया। इस अवसर पर डॉ. द्विवेदी और डॉ. त्रिपाठी का शॉल ओढ़ाकर और स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डीन (शोध) प्रो. सरिता अग्रवाल, डीन (परीक्षा) प्रो. एली मोहपात्रा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

संपादकीय समिति

संरक्षक

प्रो.(डॉ.)नितिन म. नागरकर

निदेशक एवं अध्यक्ष

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मार्गदर्शक

श्री अंशुमान गुप्ता

उप-निदेशक (प्रशासन)

संपादक

शिव शंकर शर्मा

सहायक संपादक

मधुरागी श्रीवास्तव

शाहरूख खान

सैयद शादाब

उमेश कुमार पाण्डेय

पृष्ठ सज्जा

आदित्य कुमार शुक्ला

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखकों के निजी विचार/भावनाएं हैं।

आरोग्यम् सुख सम्पदा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर

(केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्थान)

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, RAIPUR

(An Autonomous Institution under the Ministry of Health and Family Welfare, Govt. of India)

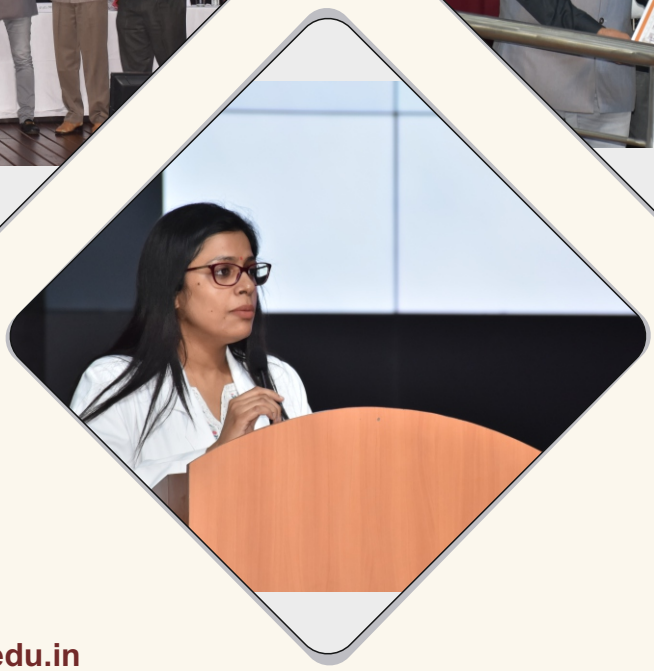

https://www.aiimsraipur.edu.in

https://twitter.com/aiimsraipur

https://www.facebook.com/
All-India-Institute-of-Medical-SciencesAIIMS-Raipur

rajbhashaprakoshth@aiimsraipur.edu.in

राजभाषा प्रकोष्ठ, अ.भा.आ.सं.,
रायपुर द्वारा प्रकाशित और प्रसारित